ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

A Study on the Telecast of Crime based Special News bulletins on Regional News Channels of Chhattisgarh.

Rajesh Kumar* & Dr. Narendra Tripathi**

***Research Scholar, Kushabhau Thakre Patrakarita Avam Jansanchar Vishwavidyalays Raipur, Chhattisgarh.*

**** Head and Research Director, Kushabhau Thakre Patrakarita Avam Jansanchar Vishwavidyalays Raipur, Chhattisgarh.***

ABSTRACT:

In the last few years the scope of media has changed a lot. In this broadened perspective, crime reporting has emerged as a basic necessity of media. It is also clear that subjects like crime arouses curiosity in people and increases the TRP of the television channels. That is why it cannot be neglected or ignored. It is also known that crime reporting develops the basic concepts of news. It strengthens creativity, patience, mantel balance and decision making. Perhaps it has become the need of the hour today for all the news channels, that is why all the news channels broadcast the crime reporting specially. Besides this , crime reporting is done separately for example the show 'Vardaat' on aajtak, 'sansani' on ABP , 'ACP Arjun ' on India T.V. Similarly, the regional news of Chattisgarh also broadcast news based on crime. The present research paper focuses on the crime based shows' Daastan –e- jurm' and ' Gunaah' on two major regional news channels- IBC 24 and ETV .

शोध सार-

पिछले कुछ समय में मीडिया का व्यक्तित्व काफी तेजी के साथ बदला है। मीडिया के फैलाव के साथ अपराध रिपोर्टिंग मीडिया की एक प्रमुख जरुरत के रुप में सामने आई है। यह भी साफ हो गया कि अपराध जैसे विषय लोगों में गहरी दिलचस्पी जगाते हैं और टेलिविजन चैनलों के लिए टीआरपी बढ़ाने की एक बड़ी वजह भी बनते हैं। इसलिए इसे शायद ही नजरअंदाज किया जाता है। यह भी माना जाता है कि अपराध रिपोर्टिंग से समाचार की मूलभूत समझ को विकसित करने में मदद मिलती है। इससे अनुसंधान, संयम, दिमागी संतुलन और निर्णय क्षमता को मजबूती मिलती है। समाचार चैनलों की शायद यही जरुरत है कि अमूमन हर राष्ट्रीय चैनलों पर अपराध समाचार को प्रमुखता से दिखाया जाता है। साथ ही, अलग से अपराध आधारित समाचार बुलेटिन भी प्रसारित किए जाते हैं। आजतक पर वारदात, एबीपी पर सनसनी, इंडिया टीवी पर एसीपी अर्जुन जैसे कार्यक्रम इसके उदाहरण हैं। राष्ट्रीय चैनलों की तरह, छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय समाचार चैनलों पर भी अपराध आधारित विशेष कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख क्षेत्रीय समाचार चैनल आईबीसी 24 और ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ पर प्रसारित होने वाले अपराध आधारित विशेष बुलेटिन "गुनाह" और "दास्तान ए जुर्म" का

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

विश्लेषण कर तथ्यों का संकलन किया गया है। शोध हेतु प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय निजी समाचार चैनलों पर प्रसारित अपराध समाचारों में सबसे ऊपर हत्या के समाचार होते हैं। अपराध समाचारों के विशेष बुलेटिन में प्रसारित 35 से 38 प्रतिशत समाचार हत्या से संबंधित होते हैं। जबकि इस तरह के विशेष बुलेटिन में समाचारों को दिए गए समय का 50 से 62 प्रतिशत समय अकेले हत्या के समाचारों का होता है। पैकेज प्रारुप में चलने वाले महत्वपूर्ण समाचारों में भी हत्या से संबंधित समाचारों का स्थान सबसे उपर है। 46 से 57 प्रतिशत पैकेज समाचार हत्या के होते हैं। विशेष संपादन तकनीक, नाट्यरुपांतरण दृश्य, पार्श्व धुन, और टेक्स्ट विजुअल ग्राफिक्स के जरिए समाचारों को और ज्यादा प्रभावकारी बनाकर जिन समाचारों का प्रसारण किया जाता है, उनमें भी हत्या से संबंधित समाचार सबसे उपर नजर आता है। ऐसे विशेष तौर पर संपादित कर प्रसारित किए जाने वाले समाचारों में 50 से 63 प्रतिशत समाचार हत्या के होते हैं। हत्या के बाद, दूसरा स्थान बलात्कार का है। ऐसे बुलेटिन में प्रसारित समाचारों में 11 से 17 प्रतिशत समाचार बलात्कार के होते हैं। बुलेटिन के गैर व्यावसायिक समय अर्थात, समाचारों को दिए जाने वाले समय का 10 से 11 प्रतिशत समय बलात्कार से संबंधित समाचारों का होता है।जबकि पैकेज प्रारुप में प्रसारित होने वाले समाचारों का 14 से 15 प्रतिशत समाचार भी बलात्कार का होता है। विशेष संवरण के साथ प्रसारित होने वाले समाचारों में भी दूसरा स्थान कमोबेश बलात्कार संबंधी समाचारों का ही दिखता है। इससे स्पष्ट होता है कि टेलीविजन चैनलों के लिए अपराध समाचारों में सबसे ज्यादा वरीयता हत्या और बलात्कार जैसे समाचारों को दी जाती है।

कुंजी शब्द--अपराध, विशेष अपराध बुलेटिन, गुनाह, दास्तान ए-जुर्म, अपराध समाचार, क्षेत्रीय समाचार चैनल, ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़, जी 24 घंटे छत्तीसगढ़, आईबीसी 24.

प्रस्तावना

अपराध समाचार, टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विषयों में समाचारों सबसे प्रमुख विषयों में से एक है। टेलीविजन चैनलों पर जितनी देर तक समाचारों का प्रसारण होता है, उनमें 10 से 20 प्रतिशत समय अवधि अपराध समाचारों का है। 1998 में जॉनसन ने अमेरिका के शिकागों में एक अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि स्थानीय चैनल अपने गैर व्यायवसायिक समय अवधि का 15 से 17 प्रतिशत समय अपराध समाचारों को देते हैं।

सवाल है, टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले समाचारों में अपराध समचार इतना प्रमुख क्यों है? काट्र्ज के मुताबिक, इसके कई कारण हैं। पहला अपराध समचार तुलनात्मक रूप से सहज और आसानी से मिल जाने वाले समाचार होते हैं। 1995 चेरमार्क ने भी अपने अध्ययन में इसे प्रमाणित किया है अपराध समाचार रुटीन में मिलने वाले समाचार होते हैं और इसके लिए संवाददाता नियमित समाचार स्रोत पर निर्भर करते हैं, जैसे कि पुलिस अधिकारी। दूसरा अपराध के बारे में लोगों को सूचना देना एक एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति के रुप में भी देखा जा सकता है। दर्शक उन खतरों से सावधान हो जाते हैं, जिनसे उनका सामना हो सकता है। तीसरा और संभवत जो सबसे बड़ा कारण है, वो यह कि अपराध समाचार दर्शकों का ध्यान बांध सकने में सक्षम होते हैं। इस संबंध में हुए कई सर्वेक्षण से पता चलता है कि लोग अपराध को समाज के सबसे बड़ी समस्या के रूप में देखते हैं और सामान्यत अपराध मुद्दों पर बातचीत करने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

किंतु सवाल ये है कि लोग टेलीविजन पर प्रसारित अपराध समाचारों की वास्तविकता पर कितना यकीन करते हैं। भारत में अब तक कोई ऐसा अध्ययन ज्ञात नहीं है, किंतु, 1996 में अमेरिका में मैग्यूरे और पॉस्टर का अध्ययन सामने आया। 64 फीसदी अमेरिकन युवाओं ने माना कि हमारे समाज में अपराध जितना है, प्रेस हू ब हू उतना दिखाता है। हालांकि, समाजिक वैज्ञानिक अपराध समाचारों की वास्तविक रिपोर्टिंग को लेकर ज्यादा संशय में होते हैं। कुछ वैज्ञानिको, जैसे बाराक ने 1993 में ये तर्क भी दिया कि मीडिया अपराध की सामाजिक वास्तविकता गढ़ती है। 1980 में गान्स कह चुके थे कि एक हद तक मीडिया अपराध की वास्तविकता को सामने रखने में अपने प्रभाव का काफी हद तक इस्तेमाल करते हैं।

दुर्भाग्य से, लगातार शोध में ये बातें सामने आई है कि टेलीविजन पर अपराध समाचारों के प्रसारण के दौरान उसके मुख्य अवयवों में काफी विसंगति होती है। (बैरिले, 1986, चेरमार्क 1995, संशो., डोमिनिक, 1978, कैपेलर, ब्लमबर्ग एवं पॉटर, 1996, सेले एवं अस्किन 1981, ट्यूनेल 1998)। सबसे प्रमुख विसंगति ये होती है कि टेलीविजन पर उन अपराध समाचारों को बहुत बढ़ा चढ़ाकर दिखाया जाता है, जो अंतर व्यक्तिक प्रकार के होते हैं, समाज में सफेदपोश अपराध की व्यापत्तता को कम तवज्जो दिया जाता है। शोधकर्ता इस बात पर भी सहमत हैं कि ये प्रवृत्ति मीडिया में आमतौर पर देखने को मिलती है, जबकि टेलीविजन पर अपराध के कार्यक्रमों के संदर्भ में ये विशेष तौर पर देखने को मिलती है।

तो क्या हमारे देश में टेलीविजन अपराध समाचारों को प्रसारित करने में इसी पैटर्न को अपनाते हैं? इस संबंध में हमारे देश में कोई उल्लेखनीय शोध कार्य सामने नहीं आ पाए है। प्रस्तुत शोध कार्य, जो अन्वेषणात्मक शोधकार्य है, छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय समाचार चैनलों के संदर्भ में इन सवालों का जवाब देने का प्रयास करता है। तीन महीनों तक छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख समाचार चैनलों पर प्रसारित विशेष अपराध समाचार बुलेटिन को रिकार्ड किया गया और फिर प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के जरिए कई सवालों के जवाब पाने की कोशिश की गई है।

शोध सामग्री एवं प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोध सामग्री छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख क्षेत्रीय समाचार चैनलों पर प्रसारित होने वाले विशेष अपराध समाचार बुलेटिन हैं। गुनाह बुलेटिन जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ चैनल पर हर दिन, रात साढ़े दस बजे से 11 बजे के बीच प्रसारित होता है। इसके एंकर छत्तीसगढ़ी सिनेमा के चर्चित खलनायक मनमोहन सिंह ठाकुर है। अपराध समाचार प्रस्तुत करने का उनका विशिष्ट और नाटकीय अंदाज है। गुनाह कार्यक्रम में हर बुधवार को नाट्यरुपांतरण आधारित एक विशेष अपराध समाचार प्रस्तुत किया जाता है। इसे रविवार को छत्तीसगढ़ी भाषा में दिखाया जाता है। दास्ताऩ ए जुर्म सोमवार से शुक्रवार तक हर दिन, साढ़े नौ बजे से 10 बजे के बीच प्रसारित होता है। इसके प्रस्तोत प्रवीण दत्ता हैं। इसमें पूरे देशभर, खासकर हिंदी प्रांत में होने वाले अपराधों समाचारों को शामिल किया जाता है। पैकेज, विओ टेक्सट और विओ विजुअल स्वरुप में समाचार प्रसारित होते हैं। बुलेटिन के आखिर में तीन से चार मिनट का विशेष पैकेज प्रसारित होता है, जिसमें नाट्य रुपांतरण दृष्यों का इस्तेमाल किया जाता है।

शोध कार्य के लिए दो क्षेत्रीय टेलीविजन चैनल जी 24 घंटे छत्तीसगढ़, जो वर्तमान में आईबीसी 24 के नाम से चलता है, और ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ के चयन के लिए कई कारक जिम्मेदार रहे। दोनों समाचार चैनल पर अपराध

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आधारित विशेष समाचार बुलेटिन का प्रसारण होता है। दोनों समाचार चैनल डायरेक्ट टू होम (डीटीएच) प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है, लिहाजा इसके कार्यक्राम के सुगमता और कम तकनीकी बाधाओं के साथ रिकार्ड करना संभव था। दोनों ही चैनल छत्तीसगढ़ में अपना खास स्थान रखते हैं। ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ का पहला सैटेलाइट चैनल माना जाता है। आरंभ में यह चैनल इंफोटेनमेंट स्वरुप में था। सुबह, दोपहर और शाम में समाचार बुलेटिन प्रसारित होते थे। बाकि समय में चैनल पर फिल्म, गीत, और दूसरे सांस्कृतिक और मनोरंजन के कार्यक्रम प्रसारित होते थे। वक्त के साथ समाचार सामग्री, प्रस्तुतिकरण और पहुंच में काफी सुधार आया। वर्तमान में 24 घंटे के समाचार चैनल के रुप में ये देश के नामचीन डीटीएच प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। राजधानी, जिला मुख्यालय से लेकर विकासखंड स्तर तक इसके संवाददाताओं नियुक्त हैं। छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के लगभग सभी प्रमुख केबल नेटवर्क पर पर उपलब्ध होकर सुदूर अंचलों में भी देखा जाता है।

आईबीसी 24 चैनल का आरंभ 2008 में जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ के रूप में हुआ। तब राष्ट्रीय मीडिया जी न्यूज नेटवर्क के फ्रेंचाइजी के तौर पर इसकी शुरूआत हुई थी। काफी उन्नत तकनीक, राष्ट्रीय मीडिया संस्थान से ट्रेनिंग प्राप्त मानव संसाधन और देश के नामचीन मीडियाकर्मी के नेतृत्व में शुरू हुआ यह चैनल बहुत जल्द छत्तीसगढ़ के कोने कोने में देखा जाने लगा। इसकी एक बड़ी वजह ये थी यह चैनल सिर्फ छत्तीसगढ़ के समाचारों को प्रसारित करता था, जबकि दूसरे तमाम क्षेत्रीय चैनल छत्तीसगढ़ के साथ साथ मध्यप्रदेश के समाचारों को भी दिखाते थे। छत्तीसगढ़ के लोगों को हर वक्त सिर्फ अपने प्रदेश के समाचारों को देखने का ये एकमात्र विकल्प था। इस चैनल ने छत्तीसगढ़ी भाषा में नियमित समाचार बुलेटिन प्रसारित किए, जो जन-जन में लोकप्रिय होने में काफी मदद किया। ये चैनल कई सालों तक छत्तीसगढ़ का सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल बना रहा।

यह संयोग ही रहा कि प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान ही यह चैनल जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ से बदलकर आईबीसी 24 हुआ। शोध कार्य की अवधि 1 मार्च 2013 से 31 मई 2013 के बीच, 28 मार्च की रात 9 बजे जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ के नाम से पांच सालों तक चलने वाला चैनल आईबीसी 24 हो गया। लेकिन इसके बुलेटिन फीचर पूर्वरत बने रहे। और जिन उद्देश्यों के साथ शोध कार्य के लिए बुलेटिन रिकार्डिंग शुरू की गई, वो सफलता के साथ पूरी हुई।

उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय समाचार चैनलों पर प्रसारित होने वाले अपराध आधारित विशेष समाचार बुलेटिन का विश्लेषण
2. छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय समाचार चैनलों पर प्रसारित होने वाले अपराध आधारित विशेष समाचार बुलेटिनों की प्रस्तुतिकरण का अध्ययन।

-

समंक संकलन

शोध कार्य के लिए आवश्यक समंकों का संकलन अल्टरनेटिव विधि से किया गया। तीन महीने की अवधि में चयनित दोनों चैनलों के बुलेटिन हर तीसरे दिन के आधार पर रिकार्ड किए गए। 1 मार्च से जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ चैनल पर प्रसारित गुनाह बुलेटिन की रिकॉर्डिंग के साथ तथ्य संकलन का कार्य शुरू किया गया। तय शोध डिजाइन

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

के अनुसार हर तीसरे दिन ये चैनल तीन महीनों तक रिकार्ड किया गया। इस तरह, हमने 1 मार्च, 4 मार्च, 7 मार्च, 10 मार्च, 13 मार्च के क्रम में बढ़ते हुए गुनाह बुलेटिन को रिकॉर्ड किया। तीन महीने में गुनाह के 30 बुलेटिन प्राप्त हुए। इसी आधार पर ईटीवी मध्यप्रदेश पर प्रसारित होने वाले दास्तान-ए-जुर्म की रिकार्डिंग 2 मार्च 2013 से शुरू की गई। तय विधि के अनुरूप हमने 2 मार्च, 5 मार्च, 8 मार्च, 11मार्च 14 मार्च के क्रम में बुलेटिन रिकार्ड करना तय किया। लेकिन, चुंकि इस कार्यक्रम का प्रसारण सप्ताह के सातों दिन नहीं होता, और शोध कार्य के दौरान कुछ विशेष अवसर आ जाने के चलते ,(26 मार्च को होली गीत पर आधारित कार्यक्रम का प्रसारण हुआ, 13 मार्च को तकनीकी दिक्कत के चलते कार्यक्रम रिकार्ड नहीं हो सका, 10 मई को पवन बंसल के इस्तीफे की खबर के चलते दास्तान-ए-जुर्म का प्रसारण नहीं हुआ, और 25 मई को झीरम नक्सली हमले के चलते सारे बुलेटिन गिरा दी गई थी।) दास्तान-ए-जुर्म के 19 बुलेटिन ही प्राप्त हो सके।

परिणाम एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक--1--

	गुनाह	दास्तान ए जुर्म
कुल बुलेटिन	30	19
कुल अपराध समाचार	180	171
कुल बुलेटिन अवधि (सेकंड)	54000	34200
कुल समाचार अवधि (सेकंड)	32335	18336

तीन महीन की अध्ययन अवधि में तय विधि से गुनाह के 30 समाचार बुलेटिन रिकॉर्ड किए गए। जबकि दास्तान ए-जुर्म के 19 बुलेटिन रिकॉर्ड हुए। अर्थात, जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ पर अपराध आधारित विशेष समाचार बुलेटिन का प्रसारण तुलानात्म दृष्टिकोण से ज्यादा है। दोनों बुलेटिन की अवधि समान, यानि आधे आधे घंटे की है। इस तरह, गुनाह के रुप में हमें 54, 000 सेकेंड्स (15 घंटे) की रिकार्डेड सामग्री प्राप्त हुई। इनमें समाचारों को दिया गया समय, अर्थात गैर व्यासायिक समय 32 हजार 335 (8 घंटे 58 मिनट 55 सेकेंड) सेकंड है। इस दौरान कुल 180 समाचारों का प्रसारण किया गया। इस तरह पाते हैं कि जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ द्वारा विशेष अपराध आधारित समाचार बुलेटिन में 60 प्रतिशत समय समाचारों को और 40 फीसदी समय विज्ञापन को दिया जाता है। ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ पर दास्तान-ए-जुर्म की रिकॉर्डिंग के रुप में 34,200 सेकंड्स (9 घंटे 30 मिनट) की सामग्री प्राप्त हुई। इनमें समाचारों को 18 हजार 336 सेकंड्स दिए गए। यानि, बुलेटिन का 54 प्रतिशत समय समाचारों को दिया गया। इस दौरान कुल 171 समाचारों का प्रसारण किया गया।

जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ के अपराध समाचार आधारित विशेष बुलेटिन गुनाह में प्रसारित अपराध समाचार एवं उनका विश्लेषण

सारणी क्रमांक 2-

अपराध समाचार	संख्या	प्रतिशत		अपराध समचार	अवधि(सेकेंड्स)	प्रतिशत
हत्या	63	35		हत्या	20065	62.05

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

बलात्कार	30	16.7		बलात्कार	3281	10.15
चोरी	14	7.78		अपहरण	1232	3.81
आत्महत्या	12	6.67		पॉकेटमारी	1230	3.804
धोखाधड़ी	12	6.67		धोखाधड़ी	1064	3.291
मर्ग	8	4.44		चोरी	1063	3.287
अपहरण	4	2.22		आत्महत्या	956	2.957
छेड़छाड़	4	2.22		कैद से फरार	611	1.89
जानलेवा हमला	4	2.22		छेड़छाड़	485	1.5
भ्रष्टाचार	4	2.22		विविध	330	1.021
हमला	4	2.22		डकैती	312	0.965
एनडीपीएस	2	1.11		लूट	266	0.823
डकैती	2	1.11		दहेज	253	0.782
नक्सल	2	1.11		जानलेवा हमला	242	0.748
मारपीट	2	1.11		हमला	193	0.597
आत्महत्या की कोशिश	1	0.56		नकली नोट	160	0.495
आर्म्स एक्ट	1	0.56		भ्रष्टाचार	96	0.297
कैद से फरार	1	0.56		नक्सल	49	0.152
जिस्मफरोशी	1	0.56		एनडीपीएस	48	0.148
दहेज	1	0.56		रिश्वतखोरी	48	0.148
नकली नोट	1	0.56		मारपीट	42	0.13
पॉकेटमारी	1	0.56		आर्म्स एक्ट	25	0.077
मिलावट	1	0.56		आत्महत्या की कोशिश	24	0.074
मैच फिक्सिंग	1	0.56		जिस्मफरोशी	24	0.074
लूट	1	0.56		मिलावटो	24	0.074
विविध	1	0.56		मैच फिक्सिंग	24	0.074

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान गुनाह बुलेटिन में 27 प्रकार के अपराध समाचारों का प्रसारण किया गया। समाचारों की संख्या के आधार पर विश्लेषण करें, तो स्पष्ट होता है कि चैनल द्वारा अपराध समाचारों में सबसे ज्यादा महत्व हत्या और बलात्कार के समाचारों को दिया गया है। सिर्फ हत्या के ही 35 प्रतिशत समाचार प्रसारित हुए है। हत्या और बलात्कार के समाचार को मिला दें, 50 फीसदी अपराध समाचार यही दो

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

मिलकर बन जाते हैं। ये चैनल के स्पष्ट रुझान को प्रकट करता है। चोरी, आत्महत्या और धोखाधड़ी के समाचार को मिला दें, तो सिर्फ पांच प्रकार के अपराध समाचार मिलकर 70 प्रतिशत समाचार अपराध समाचार बन जाते हैं। अवधि के आधार पर विश्लेषण इस बात को और भी स्पष्ट कर देता है। गुनाह में प्रसारित 27 प्रकार के अपराध समाचारों को जितना समय दिया गया, उनमें 62 प्रतिशत समय तक सिर्फ हत्या के समाचार प्रसारित हुए हैं। इसके बाद सबसे ज्यादा समय तक बलात्कार समाचारों को प्रसारित किया गया है। समाचारों को दिए गए कुल समय में 10.15 प्रतिशत समय बलात्कार से संबंधित समाचार को दिए गए। इस तरह, गुनाह बुलेटिन में 73 प्रतिशत समय तक सिर्फ हत्या और बलात्कार के समाचार प्रसारित किए गए।

ईटीवी मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के अपराध आधारित विशेष समचार बुलेटिन दास्तान-ए-जुर्म में प्रसारित अपराध समचार एवं उनका विश्लेषण

सारणी क्रमांक 3

अपराध समाचार	संख्या	प्रतिशत		अपराध समचार	अवधि(सेकेंड्स)	प्रतिशत
हत्या	66	38.6		हत्या	9487	50.37
बलात्कार	30	17.5		बलात्कार	2153	11.43
आत्महत्या	6	3.51		जिस्मफरोशी	960	5.097
धोखाधड़ी	6	3.51		धोखाधड़ी	902	4.789
अपहरण	4	2.34		आत्महत्या	689	3.658
आतंकवाद	4	2.34		अपहरण	512	2.718
एनडीपीएस	4	2.34		मानव तस्करी	481	2.554
जिस्मफरोशी	4	2.34		विविध	446	2.368
लूट	4	2.34		हंगामा	345	1.832
ठगी	3	1.75		चोरी	300	1.593
प्रदर्शन	3	1.75		लूट	284	1.508
मारपीट	3	1.75		ठगी	232	1.232
विविध	3	1.75		प्रदर्शन	214	1.136
साइबर क्राइम	3	1.75		आबकारी एक्ट	188	0.998
आर्म्स एक्ट	2	1.17		एनडीपीएस	183	0.972
चोरी	2	1.17		छेड़छाड़	173	0.918
छेड़छाड़	2	1.17		आर्म्स एक्ट	157	0.834
डकैती	2	1.17		साइबर क्राइम	156	0.828
नक्सल	2	1.17		डकैती	137	0.727
भ्रष्टाचार	2	1.17		घुसपैठ	113	0.6
मर्ग	2	1.17		मारपीट	110	0.584

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

मानव तस्करी	2	1.17		कैद से फरार	106	0.563
अंधविश्वास	1	0.58		आतंकवाद	99	0.526
आबकारी एक्ट	1	0.58		भ्रष्टाचार	68	0.361
कैद से फरार	1	0.58		नक्सल	66	0.35
घुसपैठ	1	0.58		मर्ग	42	0.223
तेजाब हमला	1	0.58		मैच फिक्सिंग	35	0.186
दंगा	1	0.58		हमला	35	0.186
दहेज उत्पीड़न	1	0.58		दंगा	32	0.17
बाल अपराध	1	0.58		बाल अपराध	32	0.17
मैच फिक्सिंग	1	0.58		तेजाब हमला	30	0.159
विस्फोट	1	0.58		विस्फोट	27	0.143
हंगामा	1	0.58		दहेज उत्पीड़न	25	0.133
हमला	1	0.58		अंधविश्वास	17	0.09
	171	100			18836	100

हत्या और बलात्कार जैसे समाचार को ईटीवी मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ द्वारा भी प्रमुखता के साथ प्रसारित किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 से यह तथ्य स्पष्ट हो रहा है। दास्तान ए-जुर्म में प्रसारित हुए समाचारों का संख्या के आधार पर विश्लेषण से पता चलता है कि इस कार्यक्रम में प्रसारित होने वाले समाचारों में करीब 39 प्रतिशत समाचार हत्या के होते हैं। जबकि 17.5 प्रतिशत समाचार बलात्कार के। अर्थात करीब 56 प्रतिशत समाचार सिर्फ हत्या और बलात्कार के होते हैं। दास्तान-ए-जुर्म में, आतंकवाद, धोखाधड़ी, जिस्मफरोशी, लूट, ड्रग्स, अपहरण जैसे खबरों को भी प्रमुखता से दिखाया जाता है।

समाचारों को दिए गए समय के आधार पर विश्लेषण से जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं, उससे कई और तथ्य भी स्पष्ट हो जाते हैं। ईटीवी के विशेष अपराध समाचार बुलेटिन में आधे से ज्यादा वक्त तक सिर्फ हत्या से संबंधित प्रसारित होते हैं। समाचारों को दिए गए समय में 50.37 प्रतिशत समय हत्या से संबंधित समाचार को दिए गए हैं। इसके बाद, बलात्कार से संबंधित समाचारों का स्थान आता है। कुल समाचारों को दिए गए समय का 11.43 प्रतिशत समय, बलात्कार से संबंधित समाचारों को दिया गया है।

प्रस्तुतिकरण का अध्ययन।

सारणी क्रमांक4

गुनाह			
पैकेज		76	42.22222
वीओ विजुअल		104	57.77778

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उपरोक्त तालिका से गुनाह बुलेटिन में प्रसारित हुए समाचारों के प्रारुप के बारे में जानकारी मिलती है। गुनाह बुलेटिन में समाचार प्रस्तुत करने के दो ही प्रारूप मिले। एक पैकेज और दूसरा विओ विजुअल। 180 समाचार में 104 यानि करीब 58 प्रतिशत समाचार विओ-विजुअल प्रारुप में प्रसारित हुए, तो 42 प्रतिशत समाचार पैकेज स्वरूप में।

सारणी क्रमांक5

दास्तान ए जुर्म		
एंकर विजुअल	1	0.584795
पैकेज	86	50.2924
विओ-विजुअल	41	23.97661
विओ टेक्सट	43	25.1462

उपरोक्त तालिका बताती है कि दास्तान ए-जुर्म बुलेटिन में प्रसारित 171 समाचारों में से 86 समाचार, अर्थात 50 % समाचार पैकेज फॉर्मेट में प्रसारित हुए हैं। जबकि 41 समाचार विओ-विजुअल, और 43 समाचार वीओ-टेक्सट प्रारुप में प्रसारित हुए। जबकि सिर्फ एक समाचार एंकर-विजुअल प्रारुप में प्रसारित हुआ है.

समाचार चैनल में ये बात स्थापित तथ्य है कि पैकेज प्रारुप में उन्हीं समाचारों को प्रसारित किया जाता है, जिनमें आम समाचारों से ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। इस तरह, पैकेज प्रारुप में प्रसारित समाचारों के विश्लेषण से प्राप्त तथ्य इस बात का उत्तर देने में सहायक होंगे कि प्रमुखता से प्रसारित किए जाने वाले समाचारों में किन समाचारों कितना महत्व दिया गया। आगे सारणी क्रमांक 6 और सारणी क्रमांक 7 से हम क्रमश गुनाह और दास्तान-ए-जुर्म बुलेटिन में पैकेज प्रारुप में प्रसारित हुए समाचारों का अध्ययन करेंगे।

सारणी क्रमांक 6

गुनाह पैकेज समाचार (76)		
अपराध समाचार	संख्या	प्रतिशत
अपहरण	1	1.316
आत्महत्या	3	3.947
कैद से फरार	1	1.316
चोरी	3	3.947
छेड़छाड़	2	2.632
जानलेवा हमला	1	1.316
डकैती	1	1.316
दहेज --	1	1.316
धोखाधड़ी	3	3.947
नकली नोट	1	1.316
पॉकेटमारी	1	1.316
बलात्कार	11	14.47

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

लूट	1	1.316
विविध	1	1.316
हत्या	44	57.89
हमला	1	1.316

अध्ययन अवधि के दौरान जी 24 घंटे छत्तीसगढ़ द्वारा कुल 76 समाचार, पैकेज प्रारुप में प्रसारित किए गए हैं। इनमें 44 अर्थात, 58 प्रतिशत समाचार हत्या के हैं। पैकेज प्रारुप में इसके बाद सबसे ज्यादा समाचार बलात्कार के प्रसारित हुए हैं। 76 में से 11 समाचार (14.47%) के साथ इसका स्थान दूसरा आता है। इसके बाद आत्महत्या, चोरी और धोखाधड़ी का स्थान है। तीनों को समान महत्व दिया गया है। इस तरह हत्या और बलात्कार के समाचारों की प्रमुखता इस स्तर पर भी कायम है।

सारणी क्रमांक 7

दास्तान ए जुर्म पैकेज समाचार (83)		
अपहरण	1	1.163
आत्महत्या	3	3.488
आबकारी	1	1.163
आर्म्स एक्ट	1	1.163
कैद से फरार	1	1.163
घुसपैठ	1	1.163
चोरी	2	2.326
छेड़छाड़	1	1.163
जिस्मफरोशी	3	3.488
धोखाधड़ी	8	9.302
डकैती	1	1.163
प्रदर्शन	1	1.163
बलात्कार	13	15.12
मानव तस्करी	2	2.326
लूट	2	2.326
विविध	3	3.488
साइबर क्राइम	1	1.163
हंगामा	1	1.163
हत्या	40	46.51
	86	100

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उपरोक्त सारणी ये बताती है कि दास्तान ए-जुर्म में पैकेज प्रारुप में प्रसारित हुए 86 समाचारों में 40 समाचार हत्या से संबंधित हैं। यानि, यहां भी हत्या से संबंधित समाचारों को दी जाने वाली प्रमुखता साफ नजर आती है. पैकेज प्रारुप में प्रसारित कर खास महत्व दिए जाने वाले समाचारों में दूसरा स्थान बलात्कार से संबंधित समाचारों का है। 86 में 13 यानि, 15.12 प्रतिशत समाचार बलात्कार के समाचार हैं। स्पष्ट है कि हत्या के बाद बलात्कार की सर्वोपरिता इस स्तर पर भी कायम है।

उपरोक्त विवरण से ये तो स्पष्ट है कि पैकेज प्रारुप में प्रसारित कर किस तरह के समाचारों को महत्वपूर्ण माना गया। आगे दो सारणी के माध्यम से इस तथ्य को और स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। ऐसे आधार पर समाचारों का विश्लेषण किया गया है जिन्हें विशेष में भी विशेष माना गया। अर्थात जो समाचार पैकेज प्रारुप में तो प्रसारित हुए ही, उन्हें और विशेष और प्रभावकारी बनाने के लिए नाट्यरुपांतरण, पार्श्व धुन, टेक्स्ट-विजुअल ग्राफिक्स को शामिल करने जैसे अतिरिक्त प्रयास किए गए।

सारणी क्रमांक 8

गुनाह विशेष संपादित समाचार (41)		
समाचार	संख्या	प्रतिशत
अपहरण	1	2.439
आत्महत्या	2	4.878
कैद से फरार	1	2.439
चोरी	2	4.878
जानलेवा हमला	1	2.439
डकैती	1	2.439
धोखाधड़ी	1	2.439
नकली नोट	1	2.439
पॉकेटमारी	1	2.439
बलात्कार	4	9.756
हत्या	26	63.41

जी 24 घंटे के गुनाह बुलेटिन में विशेष तौर पर संपादित कर विशेष महत्व के साथ प्रसारित किए गए 41 समाचारों में 26 समाचार (63.41%) हत्या के हैं। इनमें 4 समाचार (9.75%) बलात्कार के हैं।

सारणी क्रमांक 9

दास्तान ए जुर्म, विशेष संपादित समाचार (24)		
समाचार	संख्या	प्रतिशत
अपहरण	1	4.167

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आत्महत्या	1	4.167
छेड़छाड़	1	4.167
जिस्मफरोशी	3	12.5
धोखाधड़ी	2	8.333
बलात्कार	1	4.167
मानव तस्करी	1	4.167
लूट	1	4.167
हंगामा	1	4.167
हत्या	12	50
	24	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि दास्तान ए-जुर्म बुलेटिन में विशेष तौर पर संपादन कर प्रसारित किए गए 24 समाचारों में से 15 समाचार अर्थात 50 प्रतिशत समाचार हत्या के हैं। इस तरह, हत्या से संबंधित समाचारों को दी जाने वाली प्रमुखता इस स्तर पर भी साफ दिखती है। दूसरे स्थान पर जिस्मफरोशी से संबंधित समाचारों को दी गई है। तीसरे स्थान पर धोखाधड़ी का स्थान आता है।

निष्कर्ष--छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय निजी समाचार चैनलों के लिए अपराध समाचारों में सबसे पहली पसंद हत्या के समाचार हैं। अपराध समाचारों के विशेष बुलेटिन में प्रसारित 35 से 38 प्रतिशत समाचार हत्या से संबंधित समाचार होते हैं। जबकि इस तरह के विशेष बुलेटिन में समाचारों को दिए गए समय का 50 से 62 प्रतिशत समय अकेले हत्या के समाचारों को दिया जाता है। पैकेज प्रारुप में चलने वाले महत्वपूर्ण समाचारों में भी हत्या से संबंधित समाचारों का स्थान सबसे उपर होता है। पैकेज समाचारों में 46 से 57 प्रतिशत पैकेज समाचार हत्या से जुड़े समाचार हैं। विशेष संपादन तकनीक, नाट्यरुपांतरण दृश्य, पार्श्व धुन, और टेक्स्ट विजुअल ग्राफिक्स के जरिए समाचारों को और ज्यादा प्रभावकारी बनाकर जिन समाचारों का प्रसारण किया जाता है, उनमें भी हत्या से संबंधित समाचार सबसे उपर नजर आता है। 50 से 63 प्रतिशत ऐसे समाचार हत्या के होते हैं।

हत्या के बाद टेलीविन समाचार चैनल पर बलात्कार के समाचारों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। अपराध आधारित समाचारों के विशेष बुलेटिन में 11 से 17 प्रतिशत समाचार बलात्कार के होते हैं। इन बुलेटनों में समाचारों को दिए गए वक्त में बलात्कार से संबंधित समाचार दूसरे स्थान पर आते हैं। बुलेटिन के गैर व्यावसायिक समय का 10 से 11 प्रतिशत समय बलात्कार से संबंधित समाचारों को दिया जाता है। पैकेज प्रारुप में प्रसारित होने वाले समाचारों के 14 से 15 प्रतिशत समाचार भी बलात्कार के होते हैं। विशेष संवरण के साथ प्रसारित होने वाले समाचमरों में भी बलात्कार से संबंधित समाचारों का दूसरा स्थान कमोबेश बरकरार मिलता है । वर्षों पहले टेलीविजन में अपराध सामग्री को रेखांकित करती एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी WHEN IT BLEED, IT LEADS. अमेरिका जैसे देश के समाचार चैनलों द्वारा अपराध और हिंसा को प्रमुखता से दिखाने की प्रवृति छत्तीसगढ़ जैसे राज्य के क्षेत्रीय समाचार चैनलों के संदर्भ में भी देखने को मिलती है। । तथ्य ये है कि अगर आप अपराध आधारित समाचार बुलेटिन देखते हैं तो हर तीसरा समाचार हत्या का होगा। और ऐसे कार्यक्रम को देखने के लिए

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आपके द्वारा बिताए हर 10 मिनट में 5 से 6 मिनट आपको हत्या और बलात्कार के समाचारों को देखने में देना होगा।।

संदर्भ सूचि:

i. जॉन, आर. जैलर (2001). : "द नेचर एंड ओरिजिन्स ऑफ मास ओपिनियन", न्यूयॉर्क, कैम्ब्रिज पब्लिकेशन।

ii. जोनाथन, एन. फ्रीडमैन (2003).: "मीडिया वायलेंस एंड इट्स इफैक्ट्स ऑन एग्रेसन", न्यूयॉर्क, प्रैईगर।

iii. कश्यप, एस. एवं कुमार, एम (2006). : "टेलीविजन की कहानी", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

iv. कामथ, एम. वी. (1997). : "प्रोफेसनल जर्नलज्मि", नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।

v. केवल, जे. कुमार (2000). : "मास कम्युनिकेशन इन इंडिया", नई दिल्ली, ज्ञान बुक्स प्रा. लि.।

vi. क्लैपर, जे. टी. (1960). : "द इफेक्टस ऑफ मास कम्युनिकेशन", इलिनॉयस, फ्री प्रेस ग्लेन्को.

vii. कृष्णामूर्ति, नाडिग (1966). : "इंडियन जर्नलिज्म", मैसूर, यूनिवर्सिटी ऑफ मैसर।

viii. मेहता, आलोक (2006). : "पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा", नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन।

ix. मेहता, डी. दास. (1992). : "मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलज्मि इन इंडिया", नई दिल्ली, एलाइड।

x. मेनन, मृदुला एवं प्रकाश गांधी (2001). : "न्यू इंफॉर्मेशन ऑर्डर, नई दिल्ली", कनिष्का पब्लिशर्स

xi. मोहन, अरविंद (2008). : "मीडिया की खबर", दिल्ली, शिल्पायन पब्लिकेशन।

xii. नंदा, वर्तिका (2011). : "टेलीविजन और क्राइम रिपोर्टिंग", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

www.ijahms.com